FREEMIND

Date

Page

Method of Constant Stimuli

स्थिर उत्तेजना विधि अर्थात् Method of constant stimuli मनोभौतिकी की एक महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि को Frequency method भी कहते हैं। कभी-कभी इस विधि को गलत तथा सही स्थिति-विधि भी कहा जाता है। इस विधि की आवश्यकता दो कारणों से महसूस की गई। एक तो यह अभियोजन - विधि अर्थात् औसत अशुद्धि-विधि का व्यवहार सभी परिस्थितियों में करना व्यावहारिक रूप से सम्भव नहीं है। दूसरा कारण यह कि सीमा - विधि से स्वाभाव अशुद्धि तथा अभ्यास अशुद्धि के कारण प्राप्त निष्कर्ष दोषपूर्ण हो सकते हैं। अतः एक ऐसी विधि की आवश्यकता महसूस हुई जो इन दोनों विधियों की त्रुटियों से मुक्त हो। बारम्बारता - विधि इस आवश्यकता की पूर्ति करती है। इस विधि की कुछ अपनी विशेषताएँ हैं, जिनके कारण यह अन्य दो विधियों से भिन्न हो जाती है। इस विधि में समूचे प्रयोग में उत्तेजनाएँ स्थिर रहती हैं। शुरु से अन्त तक कुछ निश्चित उत्तेजनाओं को अव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है और प्रयोज्य से उनके सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता है।

Scanned with CamScanner

कुछ उत्तेजनाएँ ऐसी होती हैं, जिनका अनु-
भव प्रयोज्य को बिल्कुल नहीं होता है,
कुछ उत्तेजनाएँ ऐसी होती हैं, जिनका अनु-
~~भव प्रयोज्य को बिल्कुल नहीं होता है,~~
~~कुछ ऐसी होती है जो इन दोनों के बीच~~
स्पष्ट ज्ञान प्रयोज्य को होता है और अ-
धिक उत्तेजनाएँ ऐसी होती हैं जो इन दोनों
के बीच होती है। ये सभी उत्तेजनाएँ शुरु
से अन्त तक प्रयोग में अदल-बदल कर
प्रस्तुत की जाती है। इसलिए इस विधि को
स्थिर-उत्तेजना विधि कहते हैं।

इस विधि में प्रत्येक उत्तेजना की बारम्बारता को निर्धारित किया जाता है। यह देखने का प्रयास किया जाता है कि किस उत्तेजना को कितनी बार प्रस्तुत किया गया और प्रयोज्य ने कितनी बार उसका प्रत्यक्षीकरण सही तौर पर किया। ऐसी उत्तेजना, जिसकी बारम्बारता 100 में 50 बार पाई जाती है, उसे RL माना जाता है।

स्थिर-उत्तेजना विधि के कई गुण हैं जो इस प्रकार है —

(a) इस विधि का उपयोग ऐसी परिस्थिति में भी किया जा सकता है,

FREEMIND

Date
Page

जहाँ औसत अशुद्धि का उपयोग संभव नहीं हो पाता है। जैसे – आवाज या उत्तोलित भार की अवस्था में औसत-त्रुटि का ~~खतरा नहीं रहता है~~ उपयोग कठिन है, मगर स्थिर-उत्तेजना विधि का उपयोग बहुत आसान है।

(b) इस विधि में प्रयोज्य का निर्णय लेते समय पूर्वाभास त्रुटि तथा अभ्यास त्रुटि का खतरा नहीं रहता है। कारण यह है कि यहाँ भिन्न-भिन्न उत्तेजनाओं को अव्यवस्थित ढंग से उपस्थित किया जाता है। इस दृष्टिकोण से यह विधि सीमा-विधि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है।

(c) यह विधि औसत त्रुटि-विधि की त्रुटियों से भी मुक्त है। जिसके कारण यह विधि औसत अशुद्धि विधि की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है।

(d) इस विधि का एक गुण यह है कि यहाँ उत्तेजनाओं को अव्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। सच्ची बात यह है कि यह गुण इस विधि का मौलिक गुण है, जिस कारण यह दूसरी विधियों से भिन्न होती है। यह ठीक है कि औसत त्रुटि ~~है~~, ~~[illegible]~~

Scanned with CamScanner

विधि में कुछ हद तक अनवच्छिन्नता या बेतरतीबी का गुण पाया जाता है। लेकिन यह भी सही है कि स्थिर उत्तेजना-विधि में यह गुण काफी अधिक है। जहाँ तक सीमा-विधि का प्रश्न है, इस मामले में यह विधि बहुत पीछे है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने स्थिर-उत्तेजना-विधि का उपयोग दूसरी विधियों के साथ करके इसके महत्व को देखने का प्रयास किया है। Kellogg, 1929; ने brightness discrimination तथा Loudness discrimination के मापन में स्थिर उत्तेजना-विधि तथा 'औसत अशुद्धि-विधि' का उपयोग किया और परिणामों में समानता पाई। Guilford, 1936; ने स्थिर उत्तेजना-विधि को 'औसत-अशुद्धि विधि' की अपेक्षा 'अवसीमा' के मापन के लिए अधिक उपयुक्त पाया।

Dr. Om Prakash Keshri
Deptt of Psychology
Maharaja College,
ARA.

Scanned with CamScanner